The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV, October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

19. भारतीय सिनेमा में नायिकाओं के पदार्पण का इतिहासः एक अवलोकन

डॉ. अरुण कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
डिपार्टमेन्ट ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन
आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश
ईमेल आईडी- drarun7f@gmail.com

सारांश

भारतीय समाज में महिला और पुरुष जीवन के सभी आयामों में कंधे से कंधा मिलाकर चलते हैं। इन्हीं आयामों में से एक फिल्में हैं, जिन्हें हम समाज का एक प्रतिबिम्ब मानते हैं लेकिन हमारे समाज की एक विडम्बना है कि पुरुषों ने स्त्री को हमेशा अपने मातहत रखा है। इसी तरह फिल्मों के शुरुआती चरण में महिलाओं का अभिनेत्री के रुप में काम करना अच्छा नहीं माना जाता था। इसके बावजूद भी कुछ महिला रंगमंच कर्मियों ने इस क्षेत्र में ऐतिहासिक रुप से दखल दी। इसी के परिणाम स्वरुप आज भारतीय सिनेमा में कई नामचीन अभिनेत्रियों का नाम लिया जा सकता है। जिनके अभिनय से दर्शक मनोरंजन और सामाजिक विसंगतियों की दशा भी देखते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में भारतीय सिनेमा में महिलाओं के फिल्मों में पदार्पण और उनकी उपलब्धियों के विषय में एक विश्वसनीय ऐतिहासिक अवलोकन करने की कोशिश की गयी है।

मुख्य शब्द - समाज, फिल्में, नायिकायें, सामाजिक विभेद, अभिनय, चरित्र-चित्रण आदि।

प्रस्तावना

सिनेमा बीसवीं सदी की एक कला है। जैसा कि वाल्टर बेंजामिन ने कहा है "आधुनिक कलाएं उन परम्परागत कलाओं से बिल्कुल भिन्न होती है जो अपने चारो ओर एक 'प्रभामण्डल' और एक 'अधिकार भावना रखती थी।" लेकिन आज की कलाएँ खासतौर पर फिल्में इस तरह का कोई प्रभामण्डल नहीं रखतीं।

सिनेमा कला माध्यमों में एक विशेष स्थान रखता है। सिनेमा सिर्फ कलात्मक ही नहीं है, वह सामजिक और राजनीतिक भी है। सिनेमा ही सिर्फ ऐसी विधा है जो दूसरी विधाओं पर सबसे अधिक आश्रित है। महान जापानी सिनेमाकार कुरोसावा के अनुसार "सिनेमा विधा रंगमंच, साहित्य, स्थापत्य, कला आदि सभी से मिलती जुलती है लेकिन सब मिलाकर सिनेमा एक अद्वितीय माध्यम है।" सिनेमा भी अपनी प्राण शक्ति समाज से प्राप्त करता है।

भारतीय सिनेमा की परम्परा को खास तौर पर पारसी थियेटर के उदय के साथ जोड़कर देखा जाता रहा है। पारसी थियेटर का उदय 19वीं सदी के आखिरी के दशकों में महाराष्ट्र और गुजरात में हुआ था। इसकी शुरुआत करने वाले रंगकर्मियों में अधिकतर गुजराती भाषी पारसी थे। इसलिए इसका नाम पारसी रंगमंच रखा गया। ये रंगकर्मी तीन भाषाओं- मराठी, गुजराती और हिन्दी में नाटक किया करते थे। धीरे-धीरे थियेटर एक पापुलर माध्यम के रुप में सम्पूर्ण उत्तर भारत में फैल गया। हालांकि उसका प्रमुख केन्द्र मुंबई बना जहाँ इस तरह के नाटक खेले जाने के लिए बहुत से थियेटर स्थापित हुये थे।

अन्तर्वस्तु विश्लेषण व तुलनात्मक अध्ययन

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV, October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

सम्पूर्ण उत्तर भारत में सन् 1870 के दशक के पश्चात् पारसी नाटक मंडलियों ने पूरे उत्तर भारत में दौरा करना शुरु कर दिया। नाटको की क्षेत्रिय कम्पनियां भी सामने आने लगी और ये कम्पनियां सन् 1920 और 1930 के दशक तक नाटक पेश करती रहीं। प्रारम्भ की फिल्म कम्पनियों की स्थापना इन नाटक मंडलियों के मैनेजरों ने की थी। जिन्होने अपने सफल नाटकों को फिल्म के पर्दे पर उतारने का काम किया। ऐसी ही एक कम्पनी 'मदन थियेटर्स' थी, जो सिनेमा निर्माण और वितरण के क्षेत्र में सक्रिय होने से पहले पारसी रंगमंच की प्रसिद्ध कम्पनियों में गिनी जाती थी। आज मुंबई में देखें तो दो-एक अपवाद को छोड़कर पुराने सब नाटक-घर सिनेमा घर में बदल गये हैं। भारतीय सिनेमा ने अपने सौ वर्ष पूरे कर लिए हैं। जिससे मूक और श्याम श्वेत फिल्मों से आगे निकल कर सिनेमा वर्तमान समय में तकनीकी और आर्थिक दृष्टि के लिहाज से मजबूत हो गया है। न्यू वेब सिनेमा, समानांतर सिनेमा, कला सिनेमा और एक्सपेरिमेन्टल सिनेमा से लेकर मसालेदार फिल्मों तक भारतीय सिनेमा की शताब्दी भ्रमण अनेकों पड़ावों से चल कर उसने अपने जनमानस को प्रभावित करने का प्रयास किया है

जब हम भारतीय सिनेमा में महिला नायिकाओं के पदार्पण की बात करते हैं तो ये जानना जरुरी हो जाता है कि महिला नायिकाओं के आगमन की शुरुआत कैसे हुई। भारतीय सिनेमा में महिला नायिकाओं का व्यावसायिक प्रयोजन तो था, साथ ही साथ वह पुरुष द्वारा अभिव्यक्ति से जन्मा एक अंग भी था। प्रारम्भ में महिला नायिकाओं की मंच पर संकल्पना पुरुष नायकों द्वारा की गयी थी और आगे चल कर यही संकल्पना सिनेमा में महिला पात्र के चित्रण की आधार शिला बनी क्योंकि जब स्टेज पर अन्य सामग्री सिनेमा में प्रवेश पा रही थी तब यह छवि अछूती नहीं रह सकी।

भारतीय सिनेमा के पितामह दादा साहेब फालके ने जब अपनी पहली फिल्म के लिए मुंबई के समाचार पत्र 'इन्द्र प्रकाश में महिला नायिकाओं के लिए विज्ञापन प्रकाशित किया तो उन्हें निराश होना पड़ा। लेकिन दादा साहेब पीछे नहीं हटे और उन्होने भारत की पहली फीचर फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' में तारामती की भूमिका पुरुष अभिनेता 'अन्नासालुंके के द्वारा अभिनीत करवायी फिल्म 'लंका दहन में अन्नासालुंके ने राम के साथ सीता की भूमिका को भी अभिनीत किया। महिला पार्ट करने वाले मशहूर पुरुष अभिनेता जयशंकर सुन्दरी और बाल गन्धर्व जब कभी मुंबई के रास्ते से निकलते थे तो उनको देखने के लिए लोगो की भारी भीड़ जमा हो जाती थी। बाल गन्धर्व और जयशंकर स्त्री सौन्दर्य के नमूने बन चुके थे।

भारतीय सिनेमा की प्रथम महिला नायिका कमलाबाई गोखले ने दादा साहेब फालके की तीसरी फिल्म 'भस्मासुर मोहिनी' 1913 में अभिनय किया था। फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' देखकर वह समझ गयी थी कि तारामती की भूमिका करने वाला नायक महिला न हो कर पुरुष है इसलिए उन्होने अपने आप को दादा साहेब फालके के समक्ष प्रस्तुत कर फिल्म में भूमिका करना चाहा था। इसके अलावा उन्होंने दो मराठी फिल्मों में भी काम किया था। कमलाबाई मूलरुप से रंगमंच की अदाकारा थीं। अपनी मां दुर्गाबाई के साथ नाटको में काम किया करती थीं। उस समय नाटकों में भी महिलाओं का काम करना अच्छा नहीं माना जाता था। उस समय बाल गंधर्व महिला पात्र अदा करते थे

कमलाबाई के आने से उन्हीं के पेट पर लात पड़ी थी। सुलोचना (रुबी मेयर्स) तीसरे दशक की सफल नायिकाओं में थीं, जो साइलेंट और टॉकी दोनो फिल्मों में प्रसिद्ध हुई।

सन् 1930-40 के दौर की सबसे खूबसूरत नायिकाओं में देविकारानी, नाडिया, दुर्गा खोटे, पदमा देवी, कानन देवी, शोभनासमर्थ, कामिनी कौशल, बेगम पारा, नलिनी जयन्त आदि थीं। उस समय नलिनी जयन्त को 1940 और 1950 की सबसे खूबसूरत ओर फोटो जेनिक नायिका माना जाता था।

अछूत कन्या (1936) यह पहली फिल्म थी जिसने दलित, वह भी स्त्री की दयनीयता को भारतीय दर्शकों के समक्ष रखने का प्रयास किया। इस फिल्म में दलित रेलवे गार्ड की लड़की कस्तूरी से सवर्ण जाति का पढ़ा-लिखा लड़का प्यार करने लगता है। अछूत कन्या फिल्म का सामाजिक संदर्भ अत्यधिक विशाल है।

भारतीय सवाक सिनेमा के जनक होने का सेहरा इम्पीरियल फिल्म कम्पनी के मालिक आर्देशिर ईरानी के सिर बंधा जिन्होंने देश की पहली फीचर फिल्म 'आलम आरा' बनाई, जिसमें चौथे दशक की महिला नायिका जुबेदा ने काम किया जिसका प्रदर्शन 14 मार्च 1931 को मुंबई के मैजेस्टिक सिनेमा में हुआ। इम्पीरियल फिल्म कम्पनी की खोज के रुप में अभिनेत्री सुलोचना (रुबी मेयर्स) भी थीं जिनका उस समय मासिक वेतन पाँच हजार रुपया था जो कि मुंबई के अंग्रेज गवर्नर से ज्यादा था जबकि उस समय मास्टर विठ्ठल को ढाई हजार रुपये मिलते थे।

पाँचवें दशक की प्रसिद्ध नायिकाओं में से एक नरगिस थीं लेकिन वह किसी एक दौर की प्रसिद्ध नायिका नहीं थीं। सन् 1940 में अपना फिल्मी कैरियर आरम्भ करने वाली नरगिस सन् 1960 तक टॉप नायिका मानी जाती थीं। नरगिस का पीक टाइम रहा सन् 1950। नरगिस को भारतीय सिनेमा के इतिहास की सबसे उम्दा नायिकाओं में एक कहा जाता था।

मदर इण्डिया (1957) इस फिल्म को भारतवर्ष की प्रथम नायिका प्रधान फिल्म की पदवी दी जा सकती है। सामन्ती उत्पीड़न और निर्धनता के मध्य पिस रही एक मेहनतकश स्त्री राधा के चरित्र को नरगिस ने बखूबी निभाया है। उसके चरित्र में स्त्रीवादी चमक और आक्रामकता नजर आती है। वह स्त्री कठिन से कठिन निर्णय स्वयं लेती है और उसके परिणाम हेतु भी स्वयं तैयार रहती है। पांचवें दशक में स्त्री
के कंधों पर हल उस भावी स्त्री से हम लोगो को परिचय करवाती है जा भारतीय व्यवस्था के हाथों हारने से इन्कार कर देती है।

अपने परिवार को आर्थिक सहायता देने के लिए मधुबाला ने बचपन से ही फिल्मों में काम करना आरम्भ कर दिया था। मधुबाला अपने वक्त की सबसे मंहगी अदाकारा थीं। ट्रैजिडी क्वीन कही जाने वाली मीना कुमारी फिल्मों में आयीं और सन् 1950 से सन् 1960 तक खूब धमाल मचाया।

साहब बीवी और गुलाम (1962) छोटी बहू मीना कुमारी का चरित्र भरतीय अभिजात्य वर्ग के हाथों उत्पीड़ित उस नारी की कथा को बयां करती है, जिसे पैसों की कोई कमी नहीं है परन्तु पुरुषों के विलास साम्राज्य में उस स्त्री का कोई स्थान नही है क्योंकि वह स्त्री पत्नी है, प्रेमिका नहीं। छोटी बहू अपने पति को रिझाने के लिए वह मदिरापान तक करती है। इस फिल्म में छोटी बहू का चरित्र सबसे जबरदस्त है।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV, October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

सन् 1960 से भारतीय फिल्मों में वेस्टर्न फैशन सबसे ज्यादा दिखायी देता है। छठें दशक की भारतीय नायिकाओं में प्रमुख रुप से नूतन, हेलन, सिम्मी ग्रेवाल, तनूजा, शायरा बानो, वहिदा रहमान, शर्मिला टैगोर, मुमताज, साधना, नन्दा, वैजयंती माला आदि थीं।

छठां दशक एक तरह से कई नायिकाओं के लिए उर्वरक था जिसमें माला सिन्हा, आशा पारेख, साधना, शायरा बानो आदि की फिल्मों की खूब लहर रही। छठें दशक की अदाकाराओं ने परिधानों से लेकर केश विन्यास तक में अपनी शैली बनायी। साधना की लटें और आशा पारेख का चुस्त सलवार-कमीज खूब चला।

सन् 1970 के दौर में पहचान बनाई पापुलर और पैरलल सिनेमा की कुछ सुपर टैलेंटेड अदाकाराओं ने। उनमें प्रमुख रुप से रेखा, हेमा मालिनी, जीनत अमान, परवीन बॉबी, जया भादुड़ी, स्मिता पाटिल, शबाना आजमी आदि थीं। भारतीय सिनेमा में ग्लैमर से हटकर इन सुपरटैलेन्टेड अदाकाराओं ने काम किया। इन अदाकाराओं ने अभिनय पर अधिक जोर दिया तथा चरित्र में डूब कर उसे जीवन्त करने का पूरा प्रयास किया जिसका जीता-जागता उदाहरण शबाना आजमी की फिल्म 'अंकुर' (1973) है। जिसमें लक्ष्मी एक गूंगे बहरे मजदूर की पत्नी है जो पहले विवशता फिर आकर्षण में जमींदार के लड़के के साथ रहने लगती है। लेकिन अन्त में उस वक्त उसका रुप चौंका देता है, जब उसके पति को जमींदार का बेटा बहुत बुरी तरह से पीटता है।

सन् 1970 से 1980 के मध्य राजकपूर ने कुछ स्त्री प्रधान फिल्में बनाई जिनमें प्रमुख रुप से हैं-'सत्यम् शिवम सुन्दरम् जिसमें जीनत अमान ने काम किया था। 'प्रेमरोग' जिसमें पद्मिनी कोल्हापुरी ने काम किया था। 'राम तेरी गंगा मैली' जिसमें मन्दाकिनी ने काम किया था। राजकपूर ने फिल्म 'सत्यम् शिवम सुन्दरम् में कितनी अच्छी तरह से जीनत अमान को कलात्मकता और सौन्दर्य बोध को ध्यान में रख कर प्रस्तुत किया जो कि अत्यन्त नैसर्गिक प्रतीत होता है। सन् 1980 यानी फार्मूला फिल्मों का दौर जिसमें प्रमुख अदाकाराओं ने खूब नाम कमाया जिसमें जीनत अमान, टीना मुनीम, श्री देवी आदि थीं।

उमराव जान (1981), उमरावजान कई मामलो में एक स्त्रीवादी फिल्म है। उमराव का अच्छा जीवन व्यतीत करने का संघर्ष फिल्म की प्रमुख कथा है। उमराव कोठे की जिन्दगी से बाहर आना चाहती है लेकिन उसका प्रेमी तथा उसके घर वाले उसे नही अपनाना चाहते हैं। उमरावजान डकैतों के सरदार से शादी करना चाहती है लेकिन वह मर जाता है। उमरावजान मानव तस्करी तथा नारी पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव को बड़ी अच्छी तरह से प्रस्तुत करती है।

सन् 1990 में धक धक गर्ल माधुरी दीक्षित ने खूब नाम, दाम भारतीय सिनेमा से कमाया। साथ ही साथ अन्य कई अदाकारा जैसे रवीना टण्डन, जूही चावला, शिल्पा शेट्टी, काजोल तथा करिश्मा कपूर आदि ने अपना मुकाम बनाया।

सन् 2000 के दौर से अब तक कई नामचीन नायिकाओं ने फिल्मी दुनिया में अपनी जगह अपने काम से हासिल की। उनमें से प्रमुख रुप से ऐश्वर्या राय, करीना कपूर, कैटरीना कैफ, विद्या बालन, प्रियंका चोपड़ा तथा अमृता राव इत्यादि शामिल हैं।

चक दे इण्डिया (2007) भारतीय सिनेमा के अब तक के इतिहास में शायद पहली बार चक दे इण्डिया जैसी फिल्म का निर्माण हुआ। उन ग्यारह लड़कियों ने यह महसूस करा दिया कि वाकई में नायिकायें कैसी होती हैं। वे लड़कियां सुन्दर नही थीं लेकिन उनमें कुछ कर गुजरने की चाहत थी।

जब नायिका प्रधान फिल्में नहीं चलती तो नायिकायें मसाला सिनेमा के आगे अपने घुटने टेक देती है। भारतीय सिनेमा में नायिका का यह चरित्रांकन उस संस्कृति और समाज के नजरिये का प्रतिबिम्ब है, जो स्त्री को भोग-विलास की वस्तु के रुप में देखता है।

निष्कर्ष

यह सर्वविदित है कि भारतीय फिल्मों की शुरुआत 1913 में हुई थी। तब से अब तक कई नायिका प्रधान फिल्में बन चुकी हैं, जिनमें नायिकाओं का अभिनय जीवन्त और प्रेरणादायक रहा है। इनके अभिनय का स्तर कहीं से भी नायकों से कमतर नही रहा है, इनके द्वारा निभाये गये चरित्रों ने सामाजिक परिवर्तनों को सकारात्मक रुप से गति प्रदान की है जिनके द्वारा कहीं न कहीं स्त्री सशक्तिकरण हुआ है। महिलाओं ने भले ही आम जनमानस को अपनी अदाओं से दीवाना बनाया हो लेकिन आज भी उनको पारिश्रमिक पुरुष कलाकारों की तुलना में कम ही मिलता है। कहीं न कहीं भारतीय फिल्म उद्योग में पुरुषवादी मानसिकता हावी है। उपर्युक्त शोध से यह कहा जा सकता है कि नायिकाओं और नायकों के बीच का यह भेद भाव शायद ही मिट पायेगा।

सन्दर्भ

1. बेंजामिन, वाल्टर. (2008). *यांत्रिक पुनरुत्पादन के युग में कला का कार्य*. पेंगुइन बुक्स।
2. गोकुलसिंह, के. एम., एवं दिसानायके, विमल. (2013). *भारतीय लोकप्रिय सिनेमा: सांस्कृतिक परिवर्तन की कथा*. ट्रेन्थम बुक्स।
3. गुलज़ार. (1 जुलाई 2022). *सिनेमा की अपनी साहित्यिक भाषा होनी चाहिए*. हिन्दुस्तान टाइम्स. https://www.hindustantimes.com/cities/chandigarh-news/cinema-should-have-its-own-literature-gulzar-101655413101537.html
4. भास्कर, इरा, एवं ऐलन, रिचर्ड. (2009). *भारतीय सिनेमा: एक संक्षिप्त परिचय*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. इयेंगर, कुहू, एवं तनवीर. (2016). *ऐडैप्टेशन, ऑथेंटिसिटी और कला: भारतीय सिनेमा और वैश्विक बाज़ार*. कम्युनिकेशन, कल्चर एंड क्रिटीक. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. कौल, विनीत. (2013). *डिजिटल तकनीक के युग में पत्रकारिता*. डीए–आईआईसीटी विश्वविद्यालय।
7. कुंदे, पुरुषोत्तम. (2014). *साहित्य और सिनेमा*. हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली।
8. मिश्रा, विजय. (2002). *बॉलीवुड सिनेमा: आकांक्षाओं के मंदिर*. रूटलेज।
9. पारख, जवरीमल्ल. (वर्ष अनुपलब्ध). *हिन्दी सिनेमा का समाजशास्त्र*।

The Asian Thinker

10. रंग प्रसंग. (अप्रैल–सितम्बर 2010). *रंग प्रसंग* (एनएसडी त्रैमासिक पत्रिका, संयुक्तांक)।
11. श्रीनिवास, एस. वी. (2016). *डिजिटल पुनरुत्पादन के युग में सिनेमा का कार्य*. सेज पब्लिकेशन्स।
12. विश्वनाथ, गीता. (2015). द *"नेशन" इन वॉर: मिलिटरी लिटरेचर और वॉर फ़िल्म का अध्ययन* (शोध-प्रबंध). महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ विश्वविद्यालय, बड़ौदा।

The Asian Thinker